□□□□□□□ □□□□□□

नई दल्लिी। दल्लिी भाजपा में वधिानसभा चुनावों के टक्किट बंटवारे को लेकर राजनीतकि ऊथल-पुथल तेज हो गई है। दल्लिी वधिानसभा में वपिक्ष के नेता प्रोफेसर वजिय कुमार मल्होत्रा के इस बार भी वधिानसभा चुनाव ल□ने की घोषणा के साथ ही भाजपा संगठन में कई नेताओं का राजनीतकि गणति ग□ब□। गया है। दल्लिी के मुख्यमंत्री की कुर्सी का ख्वाब देख रहे कई नेताओं को मल्होत्रा के इस फैसले से गहरा झटका लगा है। उन्हें लग रहा है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी के □कदावेदार और हो ग□ हैं। भाजपा ने इस बार चुनावों में कसिी भी का नाम मुख्यमंत्री की कुर्सी के लि□ घोषति नहीं करने का फैसला कयिा है।

आगामी वधिानसभा चुनावों के लि□ भाजपा में टक्किटों को लेकर सरगर्मयिां ब□ गई हैं। टक्किटों के बंटवारे को लेकर पता चलेगा कि कसि गुट के लोगों को ज्यादा टक्किट हासलि हुई हैं। अगर चुनावों में भाजपा की जीत होती है तो उस गुट का ज्यादा असर होगा, जसिके ज्यादा लोग चुनाव में जीतंगे। टक्किटों को लेकर भाजपा कई ध□ों में बंटी हुई है। □क गुट मौजूदा प्रदेशाध्यक्ष वजिय गोयल का, दूसरा गुट प्रोफेसर वजिय कुमार मल्होत्रा का और तीसरा प्रवेश वर्मा का है। वैसे टक्किटों के बंटवारे को लेकर मुख्य मुकाबला प्रोफेसर मल्होत्रा और वजिय गोयल के बीच है। यह मुकाबला मौजूदा चुनावों से ही नहीं बल्कि पछिले कई चुनावों से है। चाहे वे आम चुनाव हो, वधिानसभा चुनाव हो या फरि दल्लिी नगर नगिम का चुनाव हो। ज्यादातर चुनावों में टक्किट बंटवारे को लेकर प्रोफेसर मल्होत्रा की चली है। कई बार तो गोयल टक्किट बंटवारा कमेटी की बैठकों का बहष्किार भी कर चुके हैं। लेकनि इस बार हालात दूसरे हैं। गोयल भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष है और चुनाव कमेटी के अध्यक्ष भी हैं।

दल्लिी वधिानसभा के गठन के बाद हु□ चुनावों में भाजपा □क बार और कांग्रेस तीन बार चुनाव जीत चुकी है। वर्ष 1993 का वधिानसभा चुनाव भाजपा ने जीता था। उसके बाद वर्ष 1998 का चुनाव मदनलाल खुराना की अगुआई में ल□ा गया और भाजपा को 14 सीटें हासलि हुईं। वर्ष 2003 का चुनाव सुषमा स्वराज की अगुआई में ल□ा गया और उस दौरान भाजपा को 19 सीटें हासलि हुईं। वर्ष 2008 का चुनाव प्रोफेसर वजिय कुमार मल्होत्रा की अगुआई में ल□ा गया और भाजपा को 24 सीटें हासलि हुईं। अब वर्ष 2013 का चुनाव पार्टी कसिी के भी नेतृत्व में नहीं ल□ रही है। लेकनि भाजपा में कई नेता दल्लिी की मुख्यमंत्री का ख्वाब देख रहे हैं। इनमें सबसे प्रबल दावेदार वजिय गोयल है,जो कसिी भी तरह का जो□-तो□ करके दल्लिी के मुख्यमंत्री की गद्दी तक पहुंचना चाहते हैं। वैसे भाजपा में सबसे गंभीर दावेदार डा हर्षवर्धन माने जा रहे हैं। इनके अलावा वजिेंद्र गुप्ता भी अपने लि□ लाबगि कर रहे हैं। भाजपा में मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुंचने के लि□ आतुर नेता उस समय तक राजनीतकि चैन में थे, जब तक उन्हें लगा कि मल्होत्रा इस बार का वधिानसभा का चुनाव नहीं लडें Þगे। वैसे प्रोफेसर मल्होत्रा इस बार अपनी ग्रेटर कैलाश सीट से अपने पुत्र अजय मल्होत्रा को चुनाव ल□वाना चाहते थे। संगठन में उनके राजनीतकि वरिोधी उनके इस फैसले से इन दनिों काफी प्रसन्न भी थे। दल्लिी की राजनीत में गोयल का मल्होत्रा से छत्तीस का आंक□ा रहा है। इस बार का चुनाव नहीं ल□ने के मल्होत्रा के फैसले से गोयल गुट आश्वस्त था। मल्होत्रा को अब अपने लि□ खतरा नहीं मानकर गोयल ने संगठन की सभी प्रचार सामग्रयिों में अपनी तस्वीरों के साथ प्रोफेसर मल्होत्रा की भी तस्वीरें प्रकाशति करनी शुरू कर दीं। इसके साथ ही प्रोफेसर मल्होत्रा वरिोधी गुट ने उनके पुत्र को हल्का उम्मीदवार बताकर वजिय जौली को वहां से चुनाव ल□ने के लि□ तैयार कर दयिा। कभी साक्ेत और कभी नई दल्लिी सीट से चुनाव ल□ चुके जौली इस बार अपने लि□ कोई सुरक्षति सीट तलाश रहे थे। उधर प्रोफेसर मल्होत्रा का जब इस राजनीतकि खेल का पता लगा तो उन्होंने फरि से वधिानसभा चुनाव ल□ने की घोषणा कर दी। दल्लिी नगर नगिम से दो बार, महानगर परषिद से दो बार, लोकसभा से चार बार चुनाव ल□ चुके और छह साल तक राज्यसभा सांसद रहे प्रोफेसर मलहोत्रा के इस राजनीतकि फैसले से उनके वरिोधी हतप्रभ हैं। अब उन्हें सूझ नहीं रहा है कि राजनीत के इस माहरि खलिा□ी का वे जवाब कसि तरह से दें।